IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"इस्लाम धर्म में निहित शैक्षिक विचारों का अध्ययन"

(A Study of the Educational Thoughts Contained in Islam Religion)

डॉ0 के0एन0 गुप्ता

एसो. प्रो., शिक्षा संकाय (बी0एड0)

वी0एस0एस0डी0 कालेज कानपुर

प्रस्तावना :

भारतीय गणतंत्र में हिन्दू धर्म के बाद इस्लाम धर्म दूसरा सर्वाधिक प्रचलित धर्म है जो देश की जनसंख्या का 14.2% है। भारत में इस्लाम के आगमन के बाद भारत के सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासत का एक अभिन्न अंग बन गया। इस्लाम का शाब्दिक अर्थ आत्मसमर्पण है। इस्लाम धर्म के संस्थापक पैगम्बर मोहम्मद साहब का जन्म 570ई० में अरब के मक्का नमक स्थान पर हुआ था। 40 वर्ष के आयु मोहम्मद साहब को सत्य के दिव्य दर्शन हुए। अल्लाह एक मात्र ईश्वर है और इस्लाम धर्म के प्रचार – प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। इस्लाम ईश्वर परक धर्म है। ईश्वर की इच्छा के सामने मनुष्य की कोई शक्ति नहीं है। भारत में इस्लाम धर्म का प्रचार – प्रसार 712 ई० से माना जाता है। मुगलों ने भारत में सत्ता संभाली तो इस धर्म के मानने वालों में वृद्धि हुई।

शैक्षिक विचार :

इस्लाम धर्म की शिक्षा है कि खुदा एक है। सभी मनुष्य उसके बन्दे है। अल्लाह सच्चा ज्ञान अपने पैगम्बर को देता है। इस्लाम की दृष्टि में सभी समान है। इस्लाम के अनुयायिओं को 5 वक्त नमाज पढ़ना अनिवार्य है। प्रत्येक शुक्रवार को नमाज मस्जिद में पढ़ना होता है। इस्लाम के पवित्र महीने रमजान में सूर्योदय से सूर्यास्त तक व्रत रखना चाहिए। इस्लाम में शरीयत विधि धर्म शास्त्र से है। यह कानून कुरान शरीफ तथा हदीस के विवरणों पर आधारित होती है। इस्लाम ने हर क्षेत्र में भारतीय संस्कृति को प्रभावित किया।

शिक्षा का सम्प्रत्यय :

इस्लाम धर्म दर्शन में ज्ञान प्राप्ति पर बल दिया गया। दुनिया के सभी मनुष्यों ने ज्ञान को जीवन का प्रकाश समझा और अन्तिम उद्देश्यों तक पहुँचने का सफल प्रयास किया। इसी को शिक्षा की संज्ञा दी गयी। शिक्षा की यही धारणा इस्लामी शिक्षा दर्शन में मिलती हैं। कुरान की शुरुवात ईश्वर की प्रार्थना से होती हैं। जिसमे सही मार्ग पर चलने की अवधारणा हैं। इस्लाम में शिक्षा का अर्थ – इल्म, ज्ञान व हिदायत से लिया गया हैं जो पैगम्बर से प्राप्त हों। यहाँ पर शिक्षा का अर्थ कुरान में लिखा गया इल्म या ज्ञान हिं जिसे पढने, सीखने, धारण करने और व्यवहार में प्रयोग करने का समन्वित नाम ही शिक्षा हैं। इस दृष्टि से शिक्षा एक संकुचित अर्थ रखती है – धार्मिक ज्ञान। कुरान के शब्दों में सांसारिक ज्ञान धार्मिक ज्ञान में निहित पाया जाता है और शिक्षा इस प्रकार धार्मिक और सांसारिक दोनों प्रकार का ज्ञान है और इसे ग्रहण करना मनुष्य का कर्तव्य हैं। शिक्षा का तात्पर्य संस्कृति से हैं। कुछ ऐसा विचार कुरान के पहले इंजील की विभिन्न आयतों में मिलती हैं। संस्कारों की शुद्धि ही संस्कृति हैं। इसमें इस्लाम धर्म के अनुसार अपने को अल्लाह को सौपना, सत्कर्मी होना, इल्म पाना, पवित्र और संयमी होना, अपने किये हुए को याद रखना, बुरे कार्यों के लिए पश्चाताप करना, जमात के साथ रहना, जकात देना, नमाज पढना, हज करना, जुल्म न करना और अपनी रक्षा के लिए तैयार रहना सबसे काम लेना आदि होना चाहिए। इस दृष्टि से शिक्षा बौद्धिक, भावात्मक, नैतिक, धार्मिक और सामाजिक संस्कारों या गुणों को धारण करना ही संस्कृति है।

शिक्षा का अर्थ इस्लामी दर्शन के अनुसार व्यापक समझा जाना चाहिए| संस्कृति वस्तुतः जीवन की सब गतिविधियों का समुच्चय है और शिक्षा जीवन के सभी अनुमानों का समुच्चय अर्थात कुल योग हैं| एक प्रकार से शिक्षा और संस्कृति समानार्थी हुए जो इस्लामी दर्शन के अनुसार मान्य समझा जा सकता हैं| इस्लाम शिक्षा को ज्ञान के समकक्ष समझता है और इसे अधिक महत्व देता हैं| उक्त विचारों से स्पष्ट हैं कि शिक्षा का अर्थ इल्म, ज्ञान और हिदायत हैं जो ईश्वर से प्राप्त हो या पैगम्बर से प्राप्त हो|"

शिक्षा का उद्देश्य:

इस्लामी दर्शन के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित है –

- ***ज्ञान प्राप्ति का उद्देश्य***: मुस्लिम शिक्षा का पहला उद्देश्य ज्ञान की प्राप्तियां| पैगम्बरों के अनुसार ज्ञान का अर्जन अनिवार्य है| हजरत मुहम्मद साहब ने ज्ञान को अमृत बताया और प्रत्येक मुसलमान बच्चे से ज्ञानार्जन की आशा व्यक्त की| उन्होंने धर्म – अधर्म, कर्तव्य और अकर्तव्य में विभेद करने के लिए अपने धर्म के अनुयायियों को ज्ञान प्राप्त करने की सलाह दिया| शुरू में ज्ञान प्राप्ति का उदेश्य केवल धार्मिक ज्ञान रहा लेकिन बाद में सभी प्रकार के ज्ञान पर बल दिया गया|
- ***इस्लाम धर्म का प्रचार करना***: मुस्लिम शिक्षा का दूसरा उद्देश्य इस्लाम के बन्दों में इस्लाम धर्म का प्रचार करना था| यह मुस्लिमों का एक प्रमुख कर्तव्य मान गया| वे इस्लाम के प्रचार को 'सबाब' (पुण्य) मानते है| उनका विश्वास हैं कि धर्म का प्रचार करने वाला ही गाजी होता है| भारत के मुस्लिम शासकों में अनेक विधियों की शिक्षा को स्थान मिला| इसके द्वारा भारत इस्लाम का पर्याप्त प्रचार किया| मकतबों में अध्ययन काल के प्रारम्भ से ही कुरान की शिक्षा दी जाती थी और इस प्रकार छात्रों को इस्लाम के आधारभूत सिद्धांतों से परिचित कराया जाता था| मदरसों में भी धर्म, दर्शन, साहित्य तथा इतिहास के रूप में इस्लाम का प्रचार प्रचुर मात्रा में किया गया|
- ***आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास का उद्देश्य***: कुरान के अनुसार मनुष्य को सही ज्ञान मिलने से उसका आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास होता हैं| इस्लाम इस बात पर जोर देता हैं कि यदि मनुष्य का आचरण शुद्ध और नैतिक होता है तो उस पर अल्लाह की दया होती है| यह सच्चे भक्तों एवं ईमान वालो को संगत से मिलता है| कुरान मे लिखा है "और तुम पर वह (अल्लाह) किताब में यह हुक्म उतार चुका है कि जब तुम सुन लो कि अल्लाह की आयतों से इंकार किया जा रहा है और उनकी हंसी उड़ाई जा रही है तो ऐसे लोगो के साथ मत बैठों| वरना तुम भी उन्ही जैसे हो जाओगे|" बेशक अल्लाह मुताफिकों और काफिरी, सबको दोजरव में एक जगह जमा करेगा| आगे कुरान की आयतों में उल्लेख है – "मुताफिक, काफ़िर और अल्लाह में ईमान न रखने वालो को नरक के सबसे नीचे दर्जे (आग) में रखा जाता है|" उपरोक्त कथनों से स्पष्ट है कि कुरान इस्लाम की शिक्षा का लक्ष्य धार्मिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास है|
- ***सामाजिक विकास का उद्देश्य***: सामाजिक विकास इस्लाम शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य है| शिक्षा के द्वारा सामाजिक विकास कुछ व्यवहारों में पाया जाता हैं| इस्लाम धर्म रोजा, नमाज, जकात, हज अल्लाह और उसके पैगम्बर में विश्वास पर बल देता है| इन सभी व्यवहारों, कर्तव्यों से सामाजिक भावना दृढ होती है| इसमें मुस्लिम समाज का दृढ संगठन होता है| इस प्रकार ऐसी भावना का विकास औपचारिक और अनौपचारिक दोनों प्रकार की शिक्षा का लक्ष्य कहा जा सकता है| व्यवहारिक तौर पर जो अनौपचारिक शिक्षा का प्रतिदिन के जीवन में सामूहिक खान – पान, रहन – सहन और तरीकों से मिलती हैं उसके द्वारा सबसे अधिक सामाजिक विकास सम्भव होता है|
- ***मुस्लिम संस्कृति का संरक्षण और प्रसार***: मुस्लिम शासक अपने धर्म का प्रचार करने के साथ – साथ अपनी संस्कृति का संरक्षण और प्रसार करना चाहते थे| इस प्रसार और संरक्षण का साधन शिक्षा को मानते थे| प्रत्येक सामाजिक संगठन के सदस्यों के लिए कुछ नियम संस्कार होते हैं, जिसके अनुपालन से उसकी संस्कृति का निर्माण होता है| कुरान की आयतों में हरम – हलाल, भक्ष्य – अभक्ष्य, जीवन के नियम संयम, आचरण – सलूक के तौर तरीके कानून शासन के ढंग भी दिए गए है| इस प्रकार की समस्त गतिविधियां कुरान में बतायी गयी है| स्वर्ग – नरक, क़यामत के दिन फैसला ऐसा विश्वास, ज्ञान, विज्ञान, कला – कौशल सभी का जिक्र किसी न किसी रूप में

कुरान में दिया गया हैं| भारतीय शिक्षा में इस्लाम संस्कृति का प्रभाव मध्य काल में रहा| आइने अकबरी के अनुवादक प्रो० ब्लाच्मैन बे लिखा है कि " ललित कलाओं का शौक मुगल बादशाहों में बहुत था"| तत्कालीन पुस्तक 'किस्सएं लगज' में लगभग 1480 चित्र दिए गए हैं| संगीत, कला, नृत्य, नक्काशी, भवन – निर्माण का शौक प्राय: सभी मुस्लिम शासकों में था| इस्लामी संस्कृति को विकसित करने के लिए हिन्दू संस्कृति को भी कही – कही अपनाया गया|

- ***लौकिक ऐश्वर्य की प्राप्ति का उद्देश्य*:** इस्लाम शिक्षा का उद्देश्य सांसारिक ऐश्वर्य प्राप्त करना था| इस बात को ध्यान में रखकर शिक्षा दी जाती थी जिससे बालक का भावी जीवन सांसारिक सुख सम्पन्नता से व्यतीत कर सके|
- ***राजनैतिक और राज्य विस्तार का उद्देश्य*:** धर्म प्रचार – प्रसार, संस्कृति के संरक्षण के साथ – साथ राज्य विस्तार का उद्देश्य भी था| इस्लाम धर्म मानने वालो को कुरान में हिदायत है "कि काफिरों को दोस्त न बनाये"| आगे लिखा है "ऐ पैगम्बर काफिरों और मुनाफिको के विरुद्ध जिहाद करो और उनसे सख्ती से पेश आओ"| धर्म शिक्षा के कारण ही मुहम्मद साहब को मक्का छोड़ मदीना जाना पड़ा| इससे मक्का और मदीना तक राज्य विस्तार हुआ| इस्लामी शिक्षा का उद्देश्य धर्म और राज्य दोनों का विस्तार करना था| धर्मान्तरण और धर्म परिवर्तन से जनसंख्या का विस्तार करना इनका प्रमुख लक्ष्य रहा| पाकिस्तान और हिन्दुस्तान इन्ही की नीतियों का परिणाम रहा|
- ***व्यावसायिक एवं आर्थिक विकास का उद्देश्य*:** इस्लामी शिक्षा का व्यावसायिक एवं आर्थिक विकास प्रमुख उदेश्य था| कुरान में यत्र–तत्र इसके संकेत मिलते हैं| मुस्लमान शुरू से व्यापार के लिए देश – देशांतर की यात्रा करते पाए गए| भारत में भी अरब का सौदागर 7वी सदी में आए और व्यापार कर वापस चले गये| महमूद गजनवी भारत के आर्थिक एवं ऐश्वर्य को देखकर आक्रमण किया| कुरान के मानने वालों के अनुसार इस्लाम शिक्षा का उद्देश्य व्यावसायिक एवं आर्थिक विकास उद्देश्य था|

पाठ्यक्रम :

इस्लामी शिक्षा व्यवस्था दो प्रकार की थी – प्राथमिक एवं उच्च| प्राथमिक शिक्षा 'मकतब' और उच्च शिक्षा मदरसों से दी जाती थी| अत: उनका पाठ्यक्रम भी अलग – अलग था| प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत वर्णमाला का ज्ञान, कुरान की आयते याद करना, अंकगणित, पत्र – लेखन, अर्जी नबीसी, फारसी भाषा और व्याकरण का ज्ञान कराया जाता था| नैतिक शिक्षा के लिए शेखनबी की पुस्तके – वोस्ता, गुलिस्ता, लैला – मजनू आदि पढ़ायी जाती थी|

उच्च शिक्षा का पाठ्यक्रम दो प्रकार का था – धार्मिक और लौकिक| धार्मिक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत कुरान, मुहम्मद साहब की परम्परा, इस्लामी इतिहास, इस्लामी नियम – कानून, सूफीसंत के सिद्धान्त पढाये जाते थे| लौकिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में अरबी, फारसी, साहित्य, व्याकरण, तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, कानून, इतिहास, भूगोल, चिकित्सा शास्त्र, गणित, कृषि और ज्योतिष आदि का ज्ञान कराया जाता था| इसके अतिरिक्त मदरसों में विशिष्ट शिक्षा चित्रकला और संगीत की उच्च कोटि की शिक्षा दी जाती थी| मुस्लिम काल में उक्त कलाओं का सर्वोत्तम विकास हुआ|

शिक्षण विधियाँ :

इस्लामी दर्शन की निम्नलिखित शिक्षण विधियाँ हैं –

- ***उपदेश विधि:*** समस्त कुरान एक प्रकार का उपदेश हैं और उसको देने के लिए पैगम्बर और ज्ञानी पुरुष बनाये गये| यह इस्लामी शिक्षा की प्रमुख विधि है| कुरान की आयतों में इनका उल्लेख हुआ है| इस्लामी जलसा के कार्यक्रम के द्वारा कुरान में उल्लखित धार्मिक उपदेशों का ज्ञान प्रसार करते थे| मदरसों में उपदेशात्मक ज्ञान धार्मिक शिक्षा एवं संस्कृति का आधार मानकर उस्ताद करते थे| शागिर्द बड़े ध्यान से इनके उपदेशों को आत्मसाट करते थे|
- ***सचेतन अनुकरण विधि:*** इस्लामी शिक्षा की दूसरी प्रमुख विधि सचेतन अनुकरण विधि है| यह अनुकरण शुरू की शिक्षा से ही होता है| शुरू से कुरान की आयते रटाई जाती है| इस घटना के साथ कि यह अल्लाह से प्रार्थना

स्वरुप है| नमाज में भी इस अनुकरण विधि का प्रयोग पाया जाता है| जो इस्लामी दर्शन के मानने वालों के जीवन का एक अभिन्न अंग है|

- ***पुस्तक अध्ययन विधि:*** इस्लामी शिक्षा का आरम्भ पुस्तक अध्ययन से ही होता है जबकि चन्द कलमा का पाठ रबबानी उलमा के द्वारा कराया जाता है| बाद में धर्म जिज्ञासा की पूर्ति हेतु व्यक्ति स्वयं ही कुरान एवं अन्य ग्रन्थो का अध्ययन की विधि है| यह उच्च शिक्षा के स्तर पर प्रयुक्त होती है| पुस्तक अध्ययन विधि के दो रूप होते हैं – एक तो घर पर या विद्यालय में और दुसरे पुस्तकालय| पुस्तकालय में व्यायाम करने एवं काम में लेन का चलन मुस्लिम शासकों ने भारत में काफी किया| स्वयं बादशाह एवं अन्य ज्ञान पिपासु लोग पुस्तकालय आकर ज्ञान प्राप्त करते थे| अत: स्पष्ट है कि किताबों में अल्लाह का ज्ञान होता है और प्रकाश मिलता है| इसलिए पुस्तक अध्ययन विधि के एक प्रमुख विधि कही गयी है|
- ***व्याख्यान विधि:*** इस्लामी शिक्षा मकतब एवं मदरसे में दी जाती थे| मकतब वह स्थान है जहाँ किताब पढ़ी – लिखी जाती है और मदरसा वह स्थान हैं जहाँ 'दरस' अर्थात व्याख्यान दिया जाता है| ऐसी व्याख्यान इस्लामी ज्ञान से ही नहीं सांसारिक ज्ञान से सम्बंधित होते थे| इसलिए सांसारिक शिक्षा देने के लिए ही मदरसे बने और उनमे उच्च शिक्षा की व्यवस्था थी|
- ***व्याख्या, तर्क एवं समीक्षा विधि:*** इस्लाम धर्म के विभिन्न संप्रदाय जैसे मौतजला, करामी, अशअरी, ब्रह्मवादी, सूफी, रहस्यवादी, वस्तुवादी, धर्मवादी आदि और इन सम्प्रदाओं के समर्थकों ने इस्लामी दर्शन को विभिन्न दृष्टियों से स्पष्ट करने में व्याख्या, तर्क एवं समीक्षा विधि का प्रयोग किया| इससे इस्लामी दर्शन का प्रसार हुआ| यूरोप के विभिन्न देशो में भी प्रचार का अवसर मिला| इसमें इस्लामी धर्म दर्शन सम्प्रदाय की विभिन्न ढंग से व्याख्या हुई| व्याख्या में तर्क एवं समीक्षा की तकनीक अपनायी गयी| इस्लामी शिक्षा में इन विधियों का प्रयोग किया गया|
- ***समारोह एवं यात्रा विधि:*** इस्लाम धर्म की शिखा समारोह एवं यात्रा विधि से दी जाती थी| मस्जिद, ईदगाह, तीर्थस्थान पर एकत्रित होकर शिक्षा लेने और देने का कार्यक्रम होता था| कथावार्ता के समारोह में इस्लामी शिक्षा दी जाती थी| विभिन्न सम्प्रदायों ने विभिन्न स्थानों की यात्रा में इस्लामी शिक्षा दी जाती थी| अजमेर शरीफ, फतेहपुर सीकरी, बहराइच में लीग इस्लामी शिक्षा देने लिए जाते हैं| इस तरह के मेले प्राय: मजारों पर हर एक जगह होते थे| ईद, बकरीद, मुहर्रम, वारावफात आदि उत्सवों में समारोह होते थे और उनसे मुसलमानों को शिक्षा मिलती थी|
- ***व्यावहारिक विधि:*** इस्लामी शिक्षा में व्यावहारिक विधि का प्रयोग होता था| व्यावहारिक विधि विभिन्न प्रकार की व्यावसायिक, कौशल सम्बन्धी शिक्षा देने में प्रयुक्त होती है| नमाज की क्रिया, यात्रा की क्रिया, धर्मोत्सवों की क्रिया, उत्पादन की क्रिया, उपदेश व धर्म प्रचार की क्रिया, सैनिक शिक्षा की क्रिया सभी व्यावहारिक विधि के अन्तर्गत आती है|
- ***सहकारी विधि:*** इस्लामी शिक्षा में विद्यार्थी एवं शिक्षक मिल जिलकर कार्य करते है| इसी प्रकार सब मिल जुल कर शिक्षा भी लेते हैं| शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य जनतांत्रिक सम्बन्ध पाया जाता है| इसमें शिक्षा का कार्य सरलता से पूरा होता था| शिक्षा लेने और शिक्षा देने वाले दोनों सजग रहते थे| सहकारी विधि एक तरह से शिक्षा नायक विधि की प्रक्रिया पर आधारित थी|

विद्यालय :

कुरान में विद्यालय का कोई निश्चित प्रमाण नहीं मिलता| इस्लाम धर्म के प्रचारक शिक्षक के रूप में शिक्षा देते रहते थे| जहाँ इन्होने रुकने का स्थान पर विश्राम किया, वही स्थान विद्यालय या शिक्षालय के रूप में विकसित होते गए| मक्का एवं मदीना इसके प्रमुख उदहारण है| इन्ही पैगम्बरों की मृत्यु के बाद कब्र या दरगाह बनी जो बाद में शिक्षा के स्थान हुए| बाद में मस्जिद बनी| कुरान में मस्जिद का उल्लेख मिलता हैं| वास्तव में मस्जिद सजदा की जगह होती थी| बाद में मकतब कुरान में शिक्षा लेने के स्थान का प्रमाण है| मस्जिद एवं मकतब दोनों प्राथमिक स्तर के शिक्षालय थे| मुस्लिम शासकों की मदद से पुस्तकालयों की नींव पड़ी| इस्लामी शिक्षा में समुदाय, गिरोह, व्यावसायिक शिक्षा के केन्द्र थे| कालांतर में मदरसे, खानकाह, दरगाह आदि विद्यालय के रूप में विकसित हुए|

अनुशासन :

इस्लाम धर्म शक्ति का अनुयायी हैं| इस्लाम धर्म को मानने वाले आत्म संयम में विश्वास करते हैं| इस्लाम धर्म की पुस्तक कुरान के आदेशनुसार लोगो का अल्लाह, पैगम्बर और ज्ञानी लोगो में अटूट विश्वास था| अनुशासन में दण्ड का प्रावधान था| इसमें सुधारवादी अनुशासन की प्रक्रिया भी लागू थी| कुरान की इंजील 1 पार दो आयतों 200 से 203 तक पाप पुण्य का जिक्र कर लोगो को संयम रखने को कहा गया| नेककारी और भले सलूक संकेत है| इस्लाम में पैगम्बर, धर्म–गुरु एवं उल्याओं के अनुसरण की हिदायत है| शिक्षक और शिक्षार्थी एक दुसरे का सम्मान करते थे| अनुपालन के रूप में दण्ड के व्यवस्था थी| वस्तुतः दर्शन का कार्य दण्ड से लिया जाता था| कोड़े लगाना, बेत मरना, घूसा–मुक्का आदि प्रकार की यातनाएं दी जाती ठी| सुधारवादी अनुशासन में 'तौबा' की क्रिया पश्चात की क्रिया होती थी| मुक्त अनुशासन की व्यवस्था इस्लाम धर्म में नहीं मिलता हैं| नमाज, हज, जकात सुधार के साधन कहे जाते थे|

शिक्षक :

इस्लाम धर्म में शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण था | कुरान में अल्लाह को सबसे बड़ा शिक्षक मानते हैं| कुरान (3:4:9) में उल्लेख हैं कि "हमी ने यह (कुरान) शिक्षा उतारी है और हमी निगहबान (संरक्षक) भी है|"अल्लाह ने पैगम्बर, रसूल, नबी, रब्बानी, उलेमा जैसे शिक्षक बनाये| ये शिक्षक शरीयत के आधार पर शिक्षा देने का कार्य करते थे| ये शिक्षक ज्ञानी, दार्शनिक, पवित्राचरण वाले, धर्म के मानने वाले, ईमान वाले थे| कुरान के इंजील 3 पार: 13 आयत 5 में मूसा को ज्ञान फ़ैलाने का सन्देश है| शिक्षक को अल्लाह के शुक्रगुजार और सब्र करने वाले कहे गये| इस्लामी धर्म में अल्लाह, पैगम्बर नबी उल्मा और शिक्षक पर विश्वास रखने वाला चाहिए| उदारता के साथ दान देना, कुफ्र से दूर रहना अल्लाह की इनायत में लेना, संयमपूर्ण, हिकमत वाला (ज्ञानी) होने, पाप से भय रखना और पुण्य के कार्य करने का गुण शिक्षक में होने चाहिए|

शिक्षार्थी :

इस्लाम धर्म दर्शन के अनुसार अल्लाह, पैगम्बर नबी, उलेमा शिक्षक पर विश्वास रखने वाला विद्यार्थी चाहिए| विद्यार्थी वास्तव में हुक्म बरदार समझा जाता था| विद्यार्थी भय रखने वाला हो और दी गयी कुरान या शिक्षक के हिदायतों को हृदयंगम कर ले| विद्यार्थी से अपेक्षा की जाती है कि वह पढ़े–लिखे और जीवन में उतारे| कुरान की (14:14:88) में विद्यार्थी को सादा जीवन, ऊँचा ख्याल, लोभ–लालच न हो, संसार में लिप्त होने की लालसा नहीं, विद्यार्थी को लगे रहना एवं शिक्षा ग्रहण करने वाला होना चाहिए| शिक्षक के बताये गए गुणों को विद्यार्थी में भी उक्त गुणों को पाया जाना आवश्यक समझा जाता था|

शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्ध :

इस्लामी धर्म दर्शन के अनुसार शिक्षक छात्र से मित्रवत एवं भातृवत व्यवहार रखेगा| शिक्षक शिक्षार्थी के मधुर सम्बन्ध होने चाहिए| शिक्षार्थी अर्थात शागिर्द उस्ताद के बताये गए ज्ञान को ग्रहण करते हुए आदर्शो का अनुकरण करेगा| मध्यकाल में औरंगजेब ने सह्सालेह के प्रति अभद्र व्यवहार का उल्लेख मिलता है| शागिर्द एवं उस्ताद एक दुसरे के सुख दुःख में सहनुगामी रहे|

निष्कर्ष एवं सुझाव :

इस्लाम धर्म आदर्शवादी, अध्यात्मवादी, ज्ञानवादी, समजिक्तावादी और अनुशासनवादी है| इस्लाम धर्म ने अपने सिद्धांतों से विश्व को प्रभावित किया है| इस्लाम दर्शन में शिक्षा को महत्व दिया गया| कुरान शरीफ के अनुसार तालीम की 'निजात' (मुक्ति) का स्रोत माना गया हैं| मुह्हमद साहब ने प्रत्येक सच्चे मुसलमान के लिए तालीम (शिक्षा) हासिल करना लाजिमी बताया| उनका मानना था कि तालीम से धर्म–अधर्म, कर्तव्य–अकर्तव्य का ज्ञान होता है| दान में धन से बेहतर है कि पुत्रों को शिक्षा दी जाये| उनका कहना था कि 'शागिर्द (शिष्य) की कलम की स्याही शहीदों की खून से अधिक पाक है|, स्पष्ट है कि मुस्लिम धर्म ने तालीम (शिक्षा) को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया| इस्लाम धर्म में शैक्षिक निहितार्थ साहित्य भाषा, कला संगीत और ज्योतिष के विकास में देखा जा सकता है| इस्लाम धर्म आपस में प्रेम, दया, एकता, समानता, अभिभावकों की सेवा, न्यायोचित व्यवहार, शांति बनाये रखना, दान देना, सादगी में रहना, नम्रता, दयालुता क्षमाभाव, आदर सत्कार और विश्वास पात्र होने की शिक्षा देता हैं| इस्लाम धर्म मानव सेवा पर बल देता है| इस्लाम शिक्षा भारतीय

समाज एवं जीवन को प्रभावित किया| शिक्षा के सम्प्रत्याय, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ. अनुशासन, शिक्षक, शिक्षार्थी एवं शिक्षक शिक्षार्थी सम्बन्धो का वर्णन इस्लाम शिक्षा में परिलक्षित होता है| इस्लाम शिक्षा से सम्बंधित विचारों के अध्ययन की भांति वैदिक काल, बौद्ध काल की शिक्षाओं के सम्बन्ध में अध्ययन किया जा सकता है|

सन्दर्भ ग्रन्थ :

अवस्थी, नन्द कुमार (अनुवादक) , : 'कुरान शरीफ' पृ० 27, 41, 68, 69, 207, 271, 331, 337, 351, 629, 1007, 1017.

जाफर, एस० एम०, : 'एजुकेसन इन मुस्लिम इण्डिया' खुटाबंद स्ट्रीट पेशावर, 1936.

पाण्डेय, डॉ राम शकल, : 'पाश्चत्य एवं भारतीय शिक्षा दर्शन' आर लाल बुक डिपो मेरठ, 2014.

लाल, रमन बिहारी एवं सुनीता, : 'शिक्षा के दार्शनिक परिदृश्य' आर लाल बुक डिपो मेरठ.

रूहेला, प्रो० एस० पी०, : 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार' अग्रवाल पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण, आगरा, 2010.

सिंह, डॉ० मधुरिमा एवं महेश, : 'शैक्षिक दर्शन एवं विचारक' विभोर ज्ञानमाला प्रथम संस्करण, आगरा, 2012.